प्रथम बार

मुद्रक
एजूकेशनल प्रेस
बीकानेर

समर्पण

उण वहनां

और भायां ने

जका—

समाज-शिक्षा रे

काम मे—

दो डग

आगे है।

दो शब्द

सबल सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र के लिए सभ्य शिक्षित समाज तथा स्वस्थ संस्कृत प्रेरणा प्रद जीवन-दायी वातावरण की जरूरत रहती है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव मे समाज या राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता है।

आज हमारा सामाजिक-जीवन नारकीय यातनाओं का क्रीड़ांगण बनता जा रहा है। जीवनीय नैसर्गिक स्वस्थ परंपराएं लुप्त होती हुई-सी नजर आ रही है। जगज्जीवन मे चिर सुख-शांति और समृद्धि की आशा, केवल आशा मात्र रह गई है। समाज वैयक्तिक जीवन की सुख सुविधा का मूल-आधार-केन्द्र होना चाहिए, न कि दुख दुविधाओं का प्रजनन स्थल। लेकिन आज जो उसका स्वरूप है वह पूर्ण स्पष्ट है, विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं।

प्रस्तुत पुस्तिका 'गुणवन्ती' मे कुछ राजस्थानी कविताओं का संग्रह है जो उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित है। इन में शिष्ट मनोरंजन के साथ सम्बन्धित विषय की दिशा मे भी बहुत कुछ सोचने, समझने की सामग्री है जो कि पुस्तिका के अस्तित्व ग्रहण करने का मूल उद्देश्य है। इससे यदि यत्किंचित् भी सामाजिक हित-चिंतन की दिशा मे योग मिला तो मैं अपने किये गये प्रयत्न को सफल समझूंगा।

इस पुस्तिका के प्रकाशन व अन्य आवश्यक कृत्यों के संपादन में श्री चूरू महिला परिषद् चूरू की ओर से मूल्यवान प्रेरणा मिली है तथा फर्म- श्री मोतीराम रतनचन्द शिवसागर (आसाम) के मान्य महानुभावों की ओर से सर्व विध सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूं।

२०१३
श्रावण श्यामा सप्तमी
सोमवार

कान्ह महर्षि
नोखा (राजस्थान)

भेंट

श्रीमान् ....

....

....निवासी को सादर सस्नेह भेंट

....

....

दो शब्द

सबल सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र के लिए सभ्य शिक्षित समाज तथा स्वस्थ सस्कृत प्रेरणा प्रद जीवन-दायी वातावरण की जरूरत रहती है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव मे समाज या राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता है।

आज हमारा सामाजिक-जीवन नारकीय यातनाओं का क्रीड़ांगण बनता जा रहा है। जीवनीय नैसर्गिक स्वस्थ परपराएं लुप्त होती हुई-सी नजर आ रही है। जगज्जीवन मे चिर सुख-शांति और समृद्धि की आशा, केवल आशा मात्र रह गई है। समाज वैयक्तिक जीवन की सुख सुविधा का मूल-आधार-केन्द्र होना चाहिए, न कि दुख दुविधाओं का प्रजनन स्थल। लेकिन आज जो उसका स्वरूप है वह पूर्ण स्पष्ट है, विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं।

प्रस्तुत पुस्तिका 'गुणवन्ती' मे कुछ राजस्थानी कविताओं का सग्रह है जो उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित हैं। इन में शिष्ट मनोरंजन के साथ सम्बन्धित विषय की दिशा मे भी बहुत कुछ सोचने, समझने की सामग्री है जो कि पुस्तिका के अस्तित्व ग्रहण करने का मूल उद्देश्य है। इससे यदि यत्किंचित भी सामाजिक हित-चितन की दिशा में योग मिला तो मैं अपने किये गये प्रयत्न को सफल समझूंगा।

इस पुस्तिका के प्रकाशन व अन्य आवश्यक कृत्यों के सपादन में श्री चूरू महिला परिषद् चूरू की ओर से मूल्यवान प्रेरणा मिली है तथा फर्म-- श्री मोतीराम रतनचन्द शिवसागर (आसाम) के मान्य महानुभावों की ओर से सर्व विध सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हू।

२०१३
श्रावण श्यामा सतमी
सोमवार

कान्ह महर्षि
नोखा (राजस्थान)

विषय सूची

मातृ-वन्दना	.	१
घर घर धनरा धोरा लागे	...	३
वहन कहे सुण म्हारा वीर [लोरी]	..	६
डाकी दायजो	...	१३
सुणो जी इण विध वात वणी	...	३६
अजी मत मौसा वोलो [तानो]	..	४४
मेह पावणो	. .	४६
भूंडी मार सिनेमारी	...	५१
सतान रो सुख	...	५४
ध्वजवन्दन	..	५७
आगेरा आंक	...	५६

मातृ-वन्दना

अम्ब आण संभाल
पाळ, पोष, जोति जगा,
रोग, दोष, दळ गाळ
पाळ-पाळ वण पाहुणी,

धोरां - धुरती आव
आँधी ज्यूं आथूंण री
रज ज्यूं पकड़ उडाव
भूंडां ने भच-भगवती

खूटोड़ां ने खाव
आँख-टाँच, वण सां'वळी
झपटा देती आव,
रूंखां, टूंखां बैठती

अटक पड़ी जद नाव
आ'''कहतां हाजर हुई
वणिया किसा वणाव
अपणायत पाळी सदा

आण—आकर। दळ—समूह, नष्ट कर। पाळ—टीबे। आथूण री—पश्चिम की। भूँडा ने—दुरात्माओं को। भच—तुरन्त, अचानक। खूटोड़ा—दुराचारी। टाँच—चोंच से मार। सा'वळी—पक्षी विशेष। टूंखा—चोटी।

लिछमी री धर रूप
भूप वणी भल भारती
टोपलियां ने टूँप
आजादी री नींव दी,

अभकी में अगवाण !
भीड़ पड़्यां भूली मती,
देश-धर्म री आण
राखी, फरकाई धजा।

सतवंतियां री शाख
पत पणवानां री सदा,
मानवियां रो नाक
कुण राखे थारै विना

आज आव सज-सा'ज
गाज वणी गह उम्बरी,
भर भण्डारां नाज
भारत भाग वधावणी



टूँप—मसोसना । टोपलिया—टोपधारी-विदेशी। अभकी—संकट काल। फरकाई—फहराना। शाख—पक्ष, साक्षी। पत—इज्जत।

घर घर धन रा धोरा लागे

जीवन अभियान मे सफल होने के लिए अन्य आवश्यक तत्वों के साथ हमें विवेक-युक्त सगठित सद्प्रयत्न की आवश्यकता रहती है। विवेक रहित प्रयत्न अन्धा होता है, जो अग्राह्य है। वस्तुतः बौद्धिक चेतना और श्रम से युक्त होकर ही हम अपने इच्छित लक्ष्य की ओर निर्विघ्नतापूर्वक बढ़ सकते है।

प्रस्तुत पक्तियों मे निर्देशात्मकरूप से इन्हीं तथ्यों की ओर संकेत है—

घर घर धन रा धोरा लागे

राहू राह बदल कर न्हाटो
सोने रो सूरज चढ़ आयो
सिद्ध जोग, इमरत री घड़ियां
आच्छी पुळ में लागो पायो
गायां ढींके, सॉड दड़ूके
शगती, सुरसत, सूती जागे
घर घर धन रा धोरा लागे।

धोरा—ऊंचे टीले। न्हाटो—भाग गया। पायो—शिलान्यास। ढींके—गायो का रंभाना। दड़ूके—सॉडों का गर्जना। सुरसत—सरस्वती।

नह्चो राख, सोच कर चालो,
आगे - पीछे री सुध राखो
चूक्यां सूँ चोरासी आवे
ठीक ठिकाणे इमरत चाखो
ठोकर एक सैस बुध लावे
ऊपर चढ़णो काचे धागे
घर घर धन रा धोरा लागे।

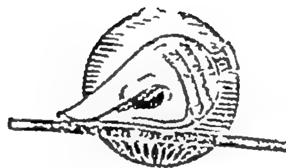
इण धरती पर स्वर्ग उतारो
मुसकल री वातां सब झूठी,
वहमी बणकर वगत न गाळो
करतब रे बळ बाँधो मुट्ठी
हिम्मत रा फळ रुच-रुच खावो,
लिछमी घूमर घाले आगे
घर घर धन रा धोरा लागे।

बोतोड़ जुग रा झेरावा
आगे रा मनसूबा आवे,
(पण) समझ बूझ री बात एक है

नह्चो—धैर्य, निश्चय। ठिकाणे—निर्दिष्ट स्थान पर। सैस—हजार। काचे धागे—कच्चे सूत के तंतु से। घूमर—नृत्य। झेरावा—स्मृतियां।

सो 'रो पचे जितोई ग्यावे
सीख सॉतरी सो दुख टाळै
जेवां - भरी राखणी मांगे
घर घर धन रा धोरा लागे।

थोड़ा दिन काठा हू काटो
रिध - सिध भरिया गाडा आवै
हर्ष - चाव रा वाजा वाजै
लाख लाख भुज-भुज रा पावै,
मिनख - मानवी माया माणे
काचा - कूड़ा पड़िया गाघे
घर घर धन रा धोरा लागे।



सॉतरी—अच्छी। सागे—साथ। काठा—सहनशील। रिध-सिध- [illegible]
काचा-कूड़ा—अपरिपक्व, मिथ्यात्वी। गावे—क्रन्दन करना।

वहन कहे सुण म्हारा वीर

स्नेह और श्रद्धा का सग्राम, या भाव और भक्ति का भव्य दर्शन—वहन और भाई।

मा का अखण्ड साम्राज्य, अल्हड वचपन के लावण्यमयी तरल तरंगों की शिखाओ पर उड़ने वाले अबोध भाव, चपल चंचल सुकुमार भाई का बाहु-अङ्क मे किलकन एक सुशील कुमारी के लिए ब्रह्मानन्द से भी कोटि गुना अधिक सुख-प्रद है।

वहन भाई को स्नेहश्रद्धामयी केवल गोद ही नही देती, वरन् कर्तव्य तथा व्यवहारिक-सफलता की उच्चतम शिक्षा भी देती है जो भाई को जीवन मे फिर वह किसी भी मूल्य पर प्राप्य नहीं होती।

प्रस्तुत पंक्तियों में इन्हीं भावों के संयोजन का प्रयत्न है —

वहन कहे सुण म्हारा वीर।

[१]

धरती ऊपर पगल्या मॉड

माखण खीर खवाऊं खांड

चेपूं चन्दन और अबीर—

वहन कहे सुण म्हारा वीर।

पगल्या-मॉड—पैर धर। माखण—नवनीत।

बहन कहे सुण म्हारा वीर

[२]

ठुमक - ठुमक पग धर रे बाळ
फूंक - फूंक पग धर संभाळ
कण - कण कांटां री लर्ज।
बहन कहे सुण म्हारा वीर!

[३]

गायां रो तूं चरणी गँवाळ
आछी करजे सार - संभाळ
दूध, दही, घी, खाजे खीर—
बहन कहे सुण म्हारा वीर!

[४]

पहला कदे न लीजे आळ
भणी, गुणी, जाई पोशाळ
सचवादां रो बणजे भीर—
बहन कहे सुण म्हारा वीर!

[५]

साथीड़ां सूं रखियो नेह
भूल - चूक मत दीजो छेह
कदे न हूजे खळ'छळ गीर—
बहन कहे सुण म्हारा वीर!

गँवाळ—ग्वाल। सार-संभाळ—निरीक्षण संरक्षण। खाजे—खाने का आदेश। आळ—छेड़-छाड़। भणी—पढना (आदेशात्मक)। पोशाल—शिक्षणालय। सचवादा—सत्यवादी। भीर—पक्ष, तरफदारी। छेह—ओछापन।

[६]

सदा वडां रो करजे मान
कहणो करजे मर्म - पताण
विपत पड़े जद धरजे धीर–
बहन कहे सुण म्हारा वीर !

[७]

मती तोड़जे कुळ री काण
बहनड़ल्यां रो करजे माण
ओढाजे, दिखणी रो चीर–
बहन कहे सुण म्हारा वीर !

[८]

देश - धर्म री रखजे लाज
सदा बाँध जे पुनरी पाज
रुच - रुच न्हाजे गंगा - नीर–
बहन कहे सुण म्हारा वीर।

[९]

अबलां रो करजे उपकार
सबलां - करजे हेत - हजार
विणज करीजे हाटॉ - हीर–
बहन कहे सुण म्हारा वीर।

काण—मर्यादा, कायदे । दिखणी रो चीर—उत्सव विशेष पर भेंट किया जाने वाला द्वितीय वस्त्र। पुनरी पाज—पुन्य-सेतु। रुच-रुच न्हाजे—श्रद्धा सहित स्नान करना। अबला रो—निर्बलों का। विणज—व्यापार।

[१०]

वळ बुद्धि रो वणी अखूट
वैरयां ने मत देयी पूठ
छाती - ताण चलायी - तीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर।

[११]

कदे न करजे झूठो मान,
मत खोई तन, धन, ईमान
दूर करी तूँ पर की पीड-
वहन कहे सुण म्हारा वीर।

[१२]

अपणी भाषा मीठा बोल
सदा बोलजे मन मे तोल
बोलण में मत वणीं फकीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर।

[१३]

मनखपणे रो समझी छाण
जाणी नफो और नुकसान
शुध - बुध राखी, सा'ज शरीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर।

वणी अखूट—अक्षय भण्डार। पूठ—पीठ। झूठो मान—घमण्ड, अहंकार। बोलण में मत वणी फकीर—वचनों की दरिद्रता, कटु वाणी का त्याग। छाण—सार। सा'ज शरीर—शरीर को साधनाओं से सिद्ध बनाना।

[१४]

मती निरखजे पर की नार,
भावज रो करजे सतकार
इम्मट राखी सत - जत - सीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[१५]

वंश बढ़ा कर रखजे नाम
आलस - छोड़ करी नित - काम
देखाये मत वणी अमीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[१६]

ऊजड़ कदे न धरजे पाव,
वचन प्रमाणे सहजे घाव,
सोने सूँ मत वणी कथीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[१७]

आण पड़े जद ऊपर भार
तणक उठाजे, भुजा पसार,
अपर - वळी वण हुई वहीर-
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

इम्मट—सदैव । सत जत सीर—सत्य संयम आदि से सम्बन्ध । देखाये—लोक दिखाउ । ऊजड़—गलत रास्ते । तणक—बलपूर्वक । अपर बळी—सशक्त । वहीर—प्रस्थान ।

[१८]

सुणी, गुणी, वीरां री ख्यात
वैठी सन्त पुरुषां री पात
पूजी देव सिद्ध मुनि पीर—
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[१९]

राजनीत रो समझी सार
जाणी रीत - प्रीत - वोहार
हार - जीत सहजे हू वीर—
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[२०]

सुख दुख में सुमरी भगवान
वणजे सगलां रो अगवान
तोल - मोल मे गहर - गभीर—
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[२१]

थोड़ो जीणो है दिन चार
हिल - मिल चाली वात - विचार
कदेन लोपी न्याय - लकीर—
वहन कहे सुण म्हारा वीर !

ख्यात—आख्यान । पात—पंक्ति में । सार—तत्व । वोहार—व्यवहार । हू—होकर । सुमरि—स्मरण करना । सगलारो—सबका । अगवान—अग्रगामी, नेता । वणजे—बनना । गहर-गम्भीर—गुरुत्वपूर्ण ।

[२२]

मां री कूख दूध री कार
'कदे न हूजे हिम्मत - हार'
हिम्मत रे साथे तकदीर–
वहन कहे सुण म्हारा वीर ।

[२३]

राम - रूप सगळो संसार
पूजी - नित, चित - प्रीत - लगार
मॉडी मनड़े में तसवीर–
वहन कहे सुण म्हारा वीर !

[२४]

आ वेला, मां रो दरबार
गोद वहन री, नेह अपार-
भूलो मत, कहणो आखीर–
वहन कहे सुण म्हारा वीर !



कूख—कुक्षि (वश परंपरागत विशिष्ट आदर्श एवं नस्ल जनित गुण)। आ वेला—यह समय।

डाकी दायजो

किसी वस्तु या सिद्धान्त विशेष का मूल्य 'मानव-जीवन के कल्याण में उसका उपयोग या राष्ट्रीय बृहत्तर समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के हित में उसकी क्षमता को देखकर ही आंका जा सकता है।'

दहेज प्रथा का प्रादुर्भाव और उसका उद्देश्य प्रारम्भ में चाहे कुछ भी रहा हो, किन्तु अब उसकी आवश्यकता समाज को नहीं है।

दहेज अत्यधिक अर्थ-व्यय के लिए बाध्य करता है फलत: व्यक्ति को अर्थोर्जन के वैधानिक शिष्ट और सभ्य तौर-तरीकों के साथ अनैतिक अवैधानिक उपायों को भी स्वीकार करना पड़ता है नहीं तो व्ययित राशि की क्षतिपूर्ति असम्भव रहती है।

अत: राष्ट्र में व्याप्त अनाचार व भ्रष्टाचार आदि को दहेज-प्रथा के पालन से परोक्ष रूप में समर्थन एवं पोषण मिलता है। अतएव इसे एक राष्ट्रीय महापाप की संज्ञा दी जानी चाहिए।

प्रस्तुत शब्द - गठन में, दहेज - संभूत - अनिष्टकारी, गम्भीरतम परिणामों की मार्मिकता को दर्शाने का यत्न किया गया है—

[१]

[illegible] गेण कर नौ महीना काढ्या
वेटे तणी अडीक
पत्थर पड़्यो जनमगी छोरो
उठी कालजे-डीक–
दड़ूक्यो डाकी दायजो

[२]

गोठां उड़े, वधायां वँटे
वेटे रा वड कोड
वेटी जायां वल - जल सूके
भींत-भचेड़े - भोड–
भंवावे डाकी दायजो

[३]

मायत एक, एक ही माटी
निपजी एकण खाण
वेटे - वेटी रे उच्छ्व मे
फर्क जमी-असमान–
घलावे डाकी दायजो

दायजो—दहेज। डाकी—मन्त्र तन्त्र बल से मनुष्यों को भक्षण करने वाले। तणी—की। अडीक—प्रतीक्षा। छो'री—लड़की। डीक—मर्म व्यथा। दड़ूक्यो—गर्वोक्ति। गोटा—प्रीति-भोज। कोड—खुशी। भींत—दीवाल। भचेडे—टकराना। भोड—मस्तक। भँवावे—भ्रमित करना। निपजी—उत्पन्न हुई।

[४]

टाबर रमें अचपला अळिया
छो'रा करे कुचाल
आंख मूंद कर मायन भिड़कें
हू बेटी पर लाल–
डिगावे डाकी दायजो

[५]

लड़े - बीछड़े छो'रा छोंडा
छो'री ऊपर भार
रोवे, ठिणके, टाबर कोई
(तो) बाई खावे मार–
पिटावे डाकी दायजो

[६ [

टाली - भूली, कह - ठिठकारी,
नीः नीः थोक सुणाय
मार - पीट कर करे आरती,
बेटी जायी माय–
डुबोवे डाकी दायजो

रमें—खेलें। अचपला—नटखट। अळिया—उत्पाती। छो'रा—लड़के। लाल—क्रुद्ध।
डिगावे—च्युत करता है। टाबर—बच्चे। बाई खावे मार—लड़की की पिटाई होती है।
टाली-भूली—गाली (टाली-भूली का अर्थ है– "बेकार एवं भूलने वाली" किसी जमाने में राजस्थान में बेकार रहना तथा बुद्धिमांद्य हेय समझा जाता था अर्थात् ये दोष कम थे)।
ठिठकारी—एक गाली। नी नी. थोक—न कहने लायक।

[७]

कड़के - वड़के झटका मारे
बाप साप बणजाय
जायोड़ी रे बटका - बोड़े
बेटी बोले हाय-
हाय रे डाकी दायजो

[८]

सगला छो'रा बैठ भणीजे
मायत रे दरबार
बेटी बैठी पोठा थापे
बिना मान मनवार-
झुरावे डाकी दायजो

[९]

किणरे दर्द, पीड़ कुण जाणे
मायत सोचे बात
बेटी बड़ी, पास नहीं कोडो,
करणा पीला हाथ-
सतावे डाकी दायजो

बाप—पिता। साप—साप। जायोडी—जिसे जन्म दिया है। बटका-बोडे—सतस करना। पोठा—गोबर। झुरावे—पूर्व स्मृतियों का भावुक चिंतन। किणरे—किसके। कोडो—पैसे की एक इकाई। करणा पीला हाथ—विवाह करना।

[१०]

विलखी माय, बाप दुख पावे;
बीर उणमुणो जाय
मोटो टाबर घर नहीं मावे;
करणो किस्यो उपाय-
जळावे डाकी दायजो

[११]

कूंकूं - वरणी देह नवलखी
गवरल रे उणियार
टड्डां बिना, टकेरी कोनी,
धिक-धिक रे संसार
सार बस, मोटो दायजो

[१२]

न्हासा - दौड़ी कर - कर हार्‌यो
तो भी पड़ी न पार
मिनख पणेरे मे'ल मूंगियो
आयो बाप बजार-
डरावे डाकी दायजो

विलखी—उदास। माय—माता। उणमुणो—उद्विग्न। मोटो टाबर—वरार्थिनी कन्या। कूंकू-वरणी—स्वस्थ, सुन्दर। गवरल रे उणियार—गौरी (पार्वती) जैसी कमनीय। टट्डा—धन का व्यञ्जित पर्यायवाची। न्हासा-दौड़ी—भाग-दौड़। मिनख पणे रे मे'ल मूंगियो—मानवता को छोड़कर।

[१३]

जायोड़ी रो हाथ पकड़ कर
लायो, बोल्यो बोल
जोड़ी वाल बताओ कोई
'रुपया लो जी खोल'
खोल लो मोटो दायजो

[१४]

माल देख लेवाल लट्टूंक्या
गर-फर करे दलाल
'चौके ऊपर चार बिंदियां'
बोल! बोल। देवाल।
झुकावे डाकी दायजो

[१५]

सस्ती माल भले नहीं झाल्यो,
मन्दी बहे करूर
बेटी खातर घर-वित्त बेच्यो,
लीन्हो, पल्लो - पूर-
सजायो मोटो दायजो

जोड़ीवाल—जीवन साथी। जी-खोल—इच्छानुसार। लेवाल—ग्राहक। लट्टूंक्या—देखने लगे। भले नहीं झाल्यो—कम विक्रय। बहे—चले। करूर—जबरदस्त। पल्लो-पूर—दहेज की सामग्री।

[१६]

बेटी लारे बिक्यो आप खुद-
और बिकी सब चीज
हुर्रे-फुर्रे हुई सगां में
सुख सपत पर बीज-
पटक्यो डाकी दायजो

[१७]

घर छूट्यो परिवार छूट्यो
छूटी परणी नार
पर खण्डां में डचकण लागो
जाय समदरां पार-
पारधी डाकी दायजो

[१८]

घरवाळी चिंता में रोवे,
पड़ियो बड़ो विजोग
सूरत रा सपनां में सॉसॉ
हाथ तंग, तन रोग-
रगां में डाकी दायजो

हुर्रे-फुर्रे—अपयश । बीज—वज्र । पटक्यो—गिरागया । परखण्डा मे—अपरिचित प्रदेशों में । डचकण लागो—अनादर सूचक घूमने के भाव (हीनोक्ति)। पारधी—भय देने वाला । विजोग—वियोग । सॉसॉ—अभाव, सदेह, कष्ट ।

[१६]

रो रो करके आंख्यां सूजी,
माथो करे बटीड़
सोच, फिकर में पींजर सूक्यो,
रूं - रूं रमगी पीड़-
फिड़ावे डाकी दायजो

[२०]

ऊठ सवेरे गाल्यां देवे,
ओ ! भोला-भगवान !
इण जीणे सूं मरणो आछो,
काढ़ पिण्ड सूं प्राण-
डसे ओ डाकी दायजो

[२१]

वेळ्यां घणी, पास नहीं घेलो,
टेम-टळे नहीं सांझ
तूटे नहीं आंख रो आंसू
राम न राखी बांझ-
तळे ओ डाकी दायजो

बटीड़—पीड़ा युक्त फड़कना। पींजर—शरीर। सूक्यो—कृश हुआ। रूं-रुं—रोम-रोम में। रमगी—फैलगयी, व्याप्त हुई। फिड़ावे—कष्ट देता है। डसे—खाता है। घणी—अधिक। तळे—तकलीफ देता है।

[२२]

कदेन बाधी लूमा - झूमा
कदेन चेगी कोर
बेटी साथे बालू - जोगो
लेगो सरब - बटोर-
खोजग्यो डाकी दायजो

[२३]

सोचे सेठ, कमाई थोड़ी
टेकस लागे अपार
लारे वो'रा चोटी - तागो
किण विध जावे पार-
पिदावे डाकी दायजो

[२४]

घर रो कागद बाच चमकियो,
'खरचण नहीं छदाम'
वो'रां वह - वह डांडी घाली
'खायो पियो हराम'-
करावे डाकी दायजो

लूमा-झूमा—हाथ के अलंकार। कोर—किनारी गोटा। चमकिया—चौका। बालू जोगो—गाली (जलादेने लायक जो है)। बटोर—संग्रह करके। खोजग्यो—गाली (जिसके खोज दुराने लायक हो)। वो'रा—ऋण-दाता। चोटी-तागो—ऋण अदायगी का तकाजा। पिदावे—हैरान करना। डांडी घाली—नया मार्ग बना दिया।

[२५]

बेटी लिखे, परण - घर - आई,
सासू करे मखौळ
नित्त कहे, कम मिल्यो दायजो,
गिण गिण बोले बोल-
अधूरो दीन्हो दायजो

[२६]

पीहरिये रा रूंख भूलगी,
थे, नां, ली, वळफेड़
सगळे घर रा मौसा मारे
बिन मतलब ले छेड़-
राड़ रो कारण दायजो

[२७]

रुकनां वढ़ी, खूटग्या रुपया,
किण विध हुए निभाव
[illegible]ी नींद रात री पालां,
पड़्यो काळजे घाव-
घाव में घोबो दायजो

अधूरो—अपूर्ण। पीहरियेरा—मायके का। रूंख—वृक्ष। थे—आप। वलफेड़—खोज खबर, संभालना। मौसा—ताना, व्यंग। राड—वैमनस्य। खूटग्या—खत्म हो गये। किणविध—कैसे। रात री पाला—रात्रि समय में। घोबो—टीस। रुकना—रिवाज, रूढिया।

[२८]

काल-वर्ष में इधक माम है
तिगरी देवे त्रास
सबकुछ छोड़ मौत - मुख आयो
तो भी ऊणी - आस-
आस रो कारण दायजो

[२७]

सत - मत री सत्ता ने भूल्यो,
तूट्यो सब आधार
झूठा लौट लडावण लागो
धोले - दिन - दोफार-
निजर में अडियो दायजो

[३०]

करे कतल, कानूनां तोड़,
बणे कागजी शाह
झूठो साचो दान दिखा कर
लूटे सस्ती वाह-
वाहरे डाकी दायजो

ऊणी—अपूर्ण। तिगरी—तीन ग्रहों का मेल— (अरिष्ट स्थान में तीन पाप ग्रहों के योग को पीड़ा कारक माना जाता है अन्न, जल की कमी और दुश्शान को भी तिग्रही कहते हैं।) कागजी शाह—केवल कागजो में साहूकार साबित होना।

[३१]

चूसे खून, मिनखरो मूंघो,
चाले कलम - कठोर
देश - धर्म री इज्जत वेचे
रूप वदल कर चोर–
चोर में वैठो दायजो

[३२]

घूंस खवाई, लूट मचाई
वण्यो जींवतो भूत
आई पुलिस, पकड़ कर लेगी,
घणा जमाया जूत–
फसावे डाकी दायजो

[३३]

विपमी भौम, कर्ज शिर ऊपर,
माल विराणे हाथ
काळ - कोठरी, मार अनोखी,
वैरण काळी रात–
डरावे डाकी दायजो

मिनख—मनुष्य। मूंघो—मूल्यवान। जींवतो भूत—जीवित प्रेत। घणा जमाया जूत—अच्छी तरह पिटाई की गई। विपमी-भौम—अननुकूल भरा। डरावे—भयभीत करे।

[३४]

माल जब्त, खुद पड़्यो कैद में
घर रूपयां री मार
तन, मन, धर्म और धन खोयो,
तल्लड़ पड़्या हजार—
हार रो कारण दायजो

[३५]

जवा, चींचड़ा, माच्छर खावे,
हुवे हाल - बेहाल
यार, दोस्त, घर वाला आघा,
पूछे कुण चल-चाल—
चाल - चूकावे दायजो

[३६]

भैड़ी वगत, हाल सब थाका,
सुमर्‌यो वेली राम
सत मत राख सांवरा अबके
लुळ-लुळ कियो प्रणाम—
रूलावे डाकी दायजो

कैद—कारागार। तल्लड—जूते। जवा चींचडा माच्छर— खून पीने वाले कीडे। आघा—दूर। चल-चाल—सामयिक बातें। भैडी—खराब। हाल सब थाका—स [illegible] होना। लुळ—झुक झुक कर।

[३७]

साचे मन सूं नाम लियोड़ो
कदै न अहळो जाय
'कटगी जेळ, जीव ले भागो,
जूत्यां हाथ उठाय'-
भगावे डाकी दायजो

[३८]

पड़तो, गुड़तो, धोती - लोटो
ले पूगो घर थेट
चिन्ता कर-कर वण्यो दूबळो,
पतलो पड़ग्यो पेट-
फेट में लायो दायजो

[३९]

घरवाळां री दशा देख कर,
पड़यो तड़ाळी खार
ओय राम जी ! पार लँघाई !!
नाव पड़ी मँझधार-
डुबोवे डाकी दायजो

अहळो—व्यर्थ। थेट—लक्ष्य स्थान पर। फेट में—चक्कर में। तड़ाळी खार—चक्कर खाकर।

[४०]

चेतो हुयो, मिल्यो मगला सूं

कर घर - धिन री बात

गिण कर गांठ बांधली पल्लै

मोटा है इनसान-

जबर ओ डाकी दायजो

[४१]

ओसर - मोसर और खरचणा,

सब रो ओ सिरदार

जन - समाज ने चूंटै - खांय,

लेवै नहीं डकार-

मार कर डाकी दायजो

[४२]

मिनख पणै रो मजो गमायो,

जाण्यो नहीं सवाद

न्यात - पांत री रुकनां राखो,

तन, मन कर बरबाद-

ताक में डाकी दायजो

चेतो—होश । गिण कर गांठ बांधली—दृढ निश्चय किया । ओसर—मृतक भोज । सिरदार—नेता । चूंटै—बलात ग्रहण करना । डकार—तृप्ति सूचक शब्द विशेष ।

[४३]

कुल ने किचर, तोड़ मर्यादा,
लांपो दियो लगाय
किण विध रुके, काळजो काढ़े,
ऊँठां चढ़-चढ़ खाय-
हाय ओ डाकी दायजो

[४४]

भण्यां गुण्यां संग बात विचारी,
चर्चा चली चड़ूड़
मिनख जूण लेकर किण जोगा,
मिल्यो माजणो धूड़-
'हटेनी डाकी दायजो ?'

[४५]

सोच समझ कर बात विचारी,
बोल्या एकण राय
'डाकी - चालो मेट्यां सरसी,
लगी कुजागा लाय'-
लायणो मोटो दायजो

किचर—कुचलना। लापो—आग लगाना। ऊंठा चढ चढ खाय—अत्यधिक अहित ए
नुक्सान का भाव। एकण-राय—एकमत होकर। डाकी चालो—अनियंत्रित स्वच्छाचार
कुजागा—गुह्य, मर्मांग। लाय—आग।

डाकी दायजो

[४६]

कूओ, खाड कर; मरे डावड्या,
छोरा पडे कुचन्य
कार-वार भी ढीलो पड्ग्यो;
राखण मे नहीं तन्त-
मिटाओ मोटो दायजो।

[४७]

मिनखाचार रह्यो नहीं जगमे
टावर हुवे लिलाम
लोग हसे, अपणो घर छीजे,
वणे अपूठो राम-
दुखां रो कारण दायजो।

[४८]

नेम-धर्म रहणो, ज्यूं रहसी,
टेकेरो के काम
वेजा रीत, वगत ने देखो,
औपत नहीं छदाम-
निभे नी मोटो दायजो

कूओ—कूप। खाड—गर्त। कारबार—व्यापार। ढीलो—गिरावट पर। तन्त—सार, लाभ। मिनखाचार—मानवीयता। लिलाम—नीलाम। छीजे—क्षीण होता है। वणे अपूठो राम—ईश्वर विमुख होता है। औपत—उत्पादन, आमदनी।

[४९]

आज अभी सूं बन्द दायजो,
बोलो सारे साथ
जिण-जिण ने मंजूर नहीं है,
जका उठावो हाथ ?–
हटाओ मोटो दायजो

[५०]

एके साथे घोष उपाड़ी,
बन्द - दायजो बन्द
पण मोटॉ वेटॉ रा मायत,
बोल्या अपणो छन्द–
'बन्द है देणो दायजो'

[५१]

'देणो साथे, बन्द लेवणो'
कुछ बोल्या पाबन्द
गरम - नरम - वातां रो हाको,
गड़ बड़ छन्द गयन्द–
फूट रो कारण दायजो

सारे साथ—सामूहिक रूप से। घोष उपाड़ी—उल्लासमय शब्दध्वान।

[५२]

लिखिया-लिखत तणीजण लागा,
मैं'णा री मनवार
ठोसा, बोसा, तीखा-ताना,
वर्पण लाग्या आगार-
खार रो मुद्दो दायजो

[५३]

खाटा-मीठा हू कर बैठा,
पाछा राणो-राण
बे मतलब क्यूं भरो चूंटिया,
बोल्यो झट अगवान-
मिटाओ मोटो दायजो

[५४]

लागे लवे, बात सब जचती'
श्री गणेश में फांट
पहले पहल शीश कुण ऊंचे,
बदनामी रो माट-
मर्म रो मारण दायजो

लिखत—इकरारनामा। तणीजण—खींचे जाने। मैं'णा—ताने। ठोसा—बाधा, रुकावट देना। तीखा-ताना—मार्मिक व्यंग कसना। मुद्दो—आधार। राणो-राण—तमाम। चूंटिया—मर्म-भेदन्। लागे-लवे—हित कारक। श्रीगणेश—आरम्भ में। माट—घड़ा।

[५५]

आगे माथे वात टाळ कर,
उठिया पंच तमाम
डाकी दायजिये सूं डरतां,
पंचां लियो न नाम–
दड़ूक्यो डाकी दायजो

[५६]

पढ़ी लिखी हुशियार डावड़्यां,
बैठ विचारी बात
बिना मौत बहनां आपांरी,
मरे करे अपघात–
हटे नी इण विध दायजो

[५७]

पराधीन जूती री जागा,
भूण्डो अपणो भाग
आभे - नाखी जमी न झाली,
मरी न खाधो नाग–
विपत में बैरी दायजो

आपारी—अपनी । अपघात—आत्म-हत्या । जूती री जागा—समाज में निम्न स्थान, बे-कदर । भूंडो—खराब । भाग—भाग्य । खाधो—खाया ।

[५८]

एक समभणी कहवण लागी,
क्यूं भोगो विटवाल?
एको कर हद पण न रख्या,
तो, न हुवे ए हाल-
भाग कर जासी दायजो

[५९]

सारी - जण्यां एक मन बोली
मन में धार - विचार
हिम्मत कियां, कठिण के जग में,
संकट रहे न लगार-
बन्द हौ निश्चे दायजो

[६०]

'तो सगली बहनां जो बैठी,
पण कर लो बल-धार
बिना - दायजे जो परणीजे,
वो, सज्जन भरतार'-
न ले, दे, बिलकुल दायजो

विटवाल—कष्ट। पण—प्रतिज्ञा। ए हाल—ऐसी हालत। के—क्या। हौ—होगा।
वो—वह। बिलकुल—सर्वथा।

[६१]

जो घर वाला इज्जत खातर,
अणख करे बदनाम
तो घर-घर में अलख जगाकर,
करो आपणो काम—
सीख दो छोड़ो दायजो

[६२]

जद बहनां "गुणवन्ती" हूसी.
शिक्षा आछी पाय
तो अलवलिया वर, बनड्यां हित,
नित उठ - आवे-जाय—
छोड़ कर आघो दायजो

[६३]

करो प्रचार छोड़ आलस ने,
घर - बाहर - दरबार
सब बहनां ने पाठ - पढ़ाओ,
बणो आप मुख्त्यार—
हुवेला जद-तद फायदो

अणख—सविकार आलोचना । गुणवन्ती—पूर्ण शिक्षित, सद्‌गुण युक्त । अलवलिया—अलबेला, सुन्दर युवक । बनड्याँ—कन्याएँ । आप मुख्त्यार—समक्ष, आत्म-निर्भर ।

[६४]

मन, वाणी सूं करी प्रतिज्ञा,
सब मिलियां मिल-जुल
घर में, ग्राम, शहर में छायो,
नवी - उमंगां [illegible]-
कांपियो डाको दायजो

[६५]

बढ़गी बात छपी अखबार,
गयो नकल रो [illegible]
जगह जगह पण लेवण लागी,
डावड़ियां 'गुणगान-
भागतो दीस्यो दायजो

[६६]

हुई सगायां छोड डावड़्यां,
हिम्मत सूं पण - धार
दायजिये रो बाळ पूतळो,
करण लगी परचार-
ठिकाणे लागो दायजो

कांपियो—थर्राया। दीस्यो—दिखाई दिया। ठिकाणे—यथा स्थान।

[६७]

लिखिया पढ़िया चोखा टाबर,
धनपतियां रां पूत
फिरे कुंवारा गोता - खाता,
कुण परणीजे नूंत-
बनी सूं बालो दायजो

[६८]

मोटोड़ां री मूंछ खूशगी,
गयो समूचो नाक
भूखा - कूके बीच - बिचौला,
फूटी चहुँदिश हाक-
मिले नहीं धेलो दायजो

[६९]

लड़क्यां रे एके सूं टूटा,
टणकोड़ां रा सींग
(कोई) भूल-चूक उण दिश नहीं जावे,
लेवण सारू हींग-
मान - मथ-मरियो दायजो

चोखा—अच्छे, योग्य। पूत—पुत्र। कुंवारा—अविवाहित। गोता-खाता—अनावश्यक इधर उधर घूमते हुए। नूंत—निमन्त्रण देकर। मोटोड़ारी—जो बड़े थे। खूशगी—निर्मूल हुई। बीच-बिचोला—दलाल। टणकोड़ा—जो बड़े थे। सींग—तुर्रा।

[७०]

शिक्षा रे बल सभी सुधरे,
मिटे बुरा ग्रहनाण
डावड़ियां मिल-जुल दुख मेट्यो,
अपणे बळ रे ताण-
भगायो इण विध दायजो।

[७१]

धीरे धीरे सब विध बैठी,
नहीं मोल रो काम
जथा-जोग सम्बन्ध हुवे मैं,
ना कोई लेवे दाम-
हुयो घर घर में फायदो।

[७२]

छोटा मोटा सारा औगुण,
दायजिये रे लार
एक एक लुक-छिपकर न्हाटा,
जातां लगी न वार-

ग्रहनाण—चिन्ह। ताण—आधार से। लार—पीछे। न्हाटा—

[७३]

हेत - प्रीत अणरीत - जीतरा,
गहरा - गीत - गवाय
गयो दायजो, खोखा - खातो,
धूम तावड़े मांय

[७४]

बल, बुद्धि, हिम्मत रे साथे,
करे ऊंघ तज काम
हाथो हाथ मिले फळ मीठो,
हुवे जगत में नाम

[७५]

इण-विध सारा दोष मिटाओ,
मन में धर कड़पाण
धर्म बधै हित हुवै देश रो,
मिले अजब औसाण



खोखा खातो—[illegible], विदाई के लिए प्रयुक्त होता है। तावड़ो—धूप। धूम—मध्य, बना। [illegible]—बीच में। ऊंघ—तन्द्रा-आलस्य। हाथो हाथ—तुरन्त। कड़पाण—दृढ़ता। औसाण—युक्ति, उपाय।

सुणोजी इण विध वात वणी

वैलासिक उपकरणों से परिपूर्ण ऊंची अट्टालि . सुरम्य अमरावती और उसमें बसने वाले अजर-अमर सुरों की सुन्दर गा । ान नहीं है, और न उन साहसियों का इति-वृत्त ही अङ्कित है— जो जीवन म आधारभूत-वास्तविकताओं को अपना कर विविध-वैचित्र्य-भरी राजनीति का आकर्षक अभिनय करते हैं, वरन् उस धरती के लाल की भावाभिव्यक्ति की छाया का निदर्शन है, जो जगजीवन के सत्य का साक्षात्कार, स्वीय चिर परिचित अन्वेषणीय-धरा धाम में कठोर श्रम के जरिये करता है। मात्र यही एक उसका सम्बल है। यही वजह है कि निदाघ की लपलपाती, उबलती हुई लू उसे झुलस नहीं सकती न हिम - शैल - सन्निभ उमडी घटायें ही, विचलित कर पाती हैं। ये तो उसे अपने सत्य-शिव-सुन्दर के और अधिक निकट पहुँचा कर आत्म विभोर बना देती है।

प्रस्तुत पंक्तियों में यही कुछ—

सुणोजी इण विध वात वणी

[१]

जेठ महीनो, खिरा ऊछले,
- तांवा - वरणो ताल
अगन लपट ले, लू खूंखाई,
रूंखा - वळगी छाल
उघाड़ो ऊभो खेत धणी
सुणोजी०

खिरा—अंगारे। ताल—समतल मैदान। लू—राजस्थान में चलने वाली गर्म हवा। खूंखाई—भयावनी आवाज के साथ चलने लगी। उघाडो—उर्घांग नग्न। धणी—मालिक।

[२]

लाँवा चोट वभूळा, डीघा,
फिरे करे फ़ंफाड़
छप्पर छान, डूमरी पटके,
और उडावे वाड़
कर्म में पटके रेत घणी
सुणोजी०

[३]

गमछो शीश फावड़ो कांधे,
वेई - बायें हाथ
गहरी निजर गाड़ कर देखी,
उडी खेत री खात
काळजो कांप्यो, कंप घणी
सुणोजी०

[४]

जिण जमीन रे पाण चुकायो,
लहणे रो पड़ - व्याज
खुद परण्यो, टाबर परणाया,
करिया औसर - काज
कमाई खिल वा जाय-छणी
सुणोजी०

लांवा चोट—दीर्घ शिखाओं वाले। वभूळा—चक्रवात। डीघा—सुदीर्घ। फ़ंफाड़—भयावह शब्द। वाड़—खेत रक्षक फूस की चहारदीवारी। काळजो—कलेजा। पाण—बलमे। पड़-व्याज—व्याज की तीसरी पीढ़ी का व्याज। वा—वह। कमाई खिल—तैयार किया हुआ खेत का भाग विशेष। छणी—सार हीन।

सुणोजी इण विध वात वणी

[५]

काठो बांध गमछियो - माथे,
वेई ली फटकार
उडिया खण्ड ढहरियां चेपी,
दाबी झट मचकार
कणांरी पग पग पांत तणी
सुणोजी०

[६]

काली पीली रमी आंधियां,
दोट - दट्टूल हजार
नवी - नवी निपजाऊ माटी,
आण - थमी इकसार
मोरियां मेह-मल्हार-भणी
सुणोजी०

[७]

उतरा खण्ड में झीणो बादळ,
आंधी रा गेंतूळ
वातां करतां विरखा आई,
खोद - वहाया चूळ
कळायण गावे सात जणी
सुणोजी०

काठो—मजबूती से। गमछियो—छोटा वस्त्र। माथे—शिर पर। फटकार—चुस्ती से। खण्ड—शमी पेड के कांटे। ढहरिया—बेर के कांटों का समूह। मचकार—ताकत से। कणां री—फ़स की पंक्तियों की। दोट-दट्टूळ—आंधड। भणी—की, गाई। झीणो—घुला हुआ। गेंतूळ—उफनती हुई लहरें। चूळ—पेड़ों की जड़ें।

[८]

हरखी धण धोरयां ने सांभ्या,

बीज कियो तय्यार

हाळी - हल - संभाल - चालिया,

सुगन सा'ज शुभ वार

सामने मिलियो विप्र-गुणी

सुणोजी०

[९]

तीतर और पपैया बोले,

गायां - गर्व अपार

खेतां री क्यूं पूछो बातां,

भँवरां री भणकार

फाळ में फूटे नाज - कणी

सुणोजी०

[१०]

वादो - वाद बधै अणमापै,

बाजर - मोठ - गुवार

रस भरिया मतीरा जाणे,

फूटे केशर - क्यार

धीज ज्यूं लालां लूंबचिणी

सुणोजी०

धण—स्त्री। धोरयां ने—बैलां को। साम्भ्या—संरक्षण दिया। हाळी—हल चलाने वाला। चालिया—चले। अणमापै—अपरिमित।

सुणोजी इण विध वात वणी

[११]

टाबर रमे, गुडे वेलां में,
बिछिया करे किलोल
कुरिया नाचे, डिगे मेमना,
मद - मस्ती री छोळ
धणी खुद भूल्यो सुध अपणी
सुणोजी०

[१२]

कण-कण में जद रतन नीपज्या,
घर - वाहर ढिग - ढेर
चारों वेद दड़ूकण लागा,
फिर-फिर चारों मेर
जगत पति तू'ठो शाम-धणी
सुणोजी इण विध बात वणी



बिछिया—बछड़े। कुरिया—ऊटनी के बच्चे। मेमना—भेड़ के बच्चे। सुध—स्मृति। जद—जब। ढिग-ढेर—अम्बार। तू'ठो—संतुष्ट हुआ।

तानो

गृहस्थ-जीवन की सुख, समृद्धि, सफलता और पूर्णता का भार, मुख्यत. दम्पत्ति पर ही अवलम्बित रहता है। गृहस्थी की सुरम्य-वाटिका का सर्जन और वर्धन वस्तुतः इन दो प्राणियों (स्त्री पुरुष) के सह-सञ्चरण और मनोयोग पूर्ण-कृत-प्रयत्न का ही परिणाम होता है। जब इन उभय विधाताओं के विचारों या क्रियाओं मे किसी प्रकार का गत्यवरोध उत्पन्न होता है तो गृहस्थी का 'आधार-भूत धरातल, प्रायः हिल उठता है। स्त्री इस लघु ससार की पालिका एव अन्त. शासन की अधिष्ठात्री देवी होने से उसे विशेष चिन्ता होना स्वाभाविक ही है।

अतः वह उस कारण भूत समस्या को बडे ही प्रभावोत्पादक ढंग से हल करने का यत्न करती है। पति को उसकी जिम्मेदारियों से अवगत कराकर उन्हे पूर्ण करने के लिए निवेदन करती है। जिससे स्वसर्जित ससार का अनिष्ट एव अमगल न हो। इस कथोपकथन के लिए, व्याज, व्यग, विनोद एव कुतूहलपूर्ण भाषा-शैली का प्रयोग, चतुर गृहणिए बड़ी सरलता और स्वाभाविकता से करती है।

प्रस्तुत पंक्तियों मे उक्त भावो से सम्बद्ध— दाम्पत्य-सघर्ष का एक चित्र—

तानो

अजी मत मौसा बोलो !
तड़के ऊठ उठाऊँ कचरो,
सांभू टींगर, गाय
आप भेंवर दोफारां तांई,
सूता रोः तणणाय-
दोष म्हारे पर ढोळो
अजी मत०

पीसूं, पोऊं, पांणी लाऊं,
डेढ कोस सू जाय
भूड़ूं घास, नीरणी नीरूं,
जोड़ी लाऊँ पाय-
आप डगरा में डोलो
अजी मत०

कारण विना, वड़क कर बोलो,
नहीं मान मनवार
राम ! इसा के पाप कमाया,
रूठ्यो रह भरतार-
जवानी रो ओ झोलो
अजी मत०

मौसा बोलो—व्यंग-व्याज में कहना। तड़के—प्रातः। टींगर—बच्चों को। दोफारा—दुपहर। तांई—तक। तणणाय—निश्चित होकर सोने वाले के लिए विशेषतः किया जाता है। ढोळो—गिराओ। पीस्—आटा पीसना। नीरणी—पशुओं की खाद्य सामग्री। नीरू—पशुओं को चारा देना। जोड़ी—बैल। पाय—पानी पिलाना। झोलो—हरे खेत को जला देने वाली हवा।

भंवर ! सभा में, हाथ पकड़ कर,
लाया थे, कर कोड
ऊभी आई, आडी जासूं,
क्यां ने, करो मरोड़ ?
अमी में क्यूं विष घोळो
अजी मत०

कोजी - भूंडी हू जैसी हूं,
अब के ? काढ्यां खोड़
परण्या पहली, चेतो करता,
क्यू लाया गठ-जोड़ ?
अणख क्यूं छाती छोलो
अजी मत०

इसा भंवर ! के म्हारे खातर,
लाया - लङ्का - लूट
भागी ठूम, बोरलो मुचियो,
मोती पड़ियो टूट-
हार लाया मन्द - मोलो
अजी मत०

कर-कोड—खुशी के साथ। ऊभी-आई—जीवित आई थी। आडी-जासूं—मरकर निकलू गी। मरोड़—नखरे। कोजी—खराब। अब-के—अब क्या होता है। खोड़—नुकताचीनी। गठ-जोड़—ग्रन्थि बन्धन करके। छोलो—छाल उतारना। मन्द-मोलो—कम कीमत का। भागी—टूट गयी।

तानो

कपड़ां सूं बुगचा कद भरिया,
कद मीठी मनवार ?
न्हास-दौड़ कर गोडा गाल्या,
तो भी नित फटकार-
पेटिया किताक तोलो
अजी मत०

धणक नाम कद कियो देश में,
चढ वैर्‌यां री लार
जिण-बल-गरब करूं सखियां में,
भीणो काजळ सार-
पीव। घर में लो ओ'लो
अजी मत०

दुखियां रे आडा कद आया,
कर्‌यो किसो उपकार
किण बल-पाण आकरा-बोलो,
कह्‌ज्यो बात-विचार-
दियो कद-कर-कर पोलो
अजी मत०

बुगचा—कपडे रखने के कलात्मक थैले। पेटिया—मुफ्त का भोजन। किताक—कितने। धणक-नाम—धवल कीर्ति विस्तारण। जिण-बल—उस बल से। भीणो—सूक्ष्म। काजळ—अञ्जन। सार—लगाकर। लो-ओ'लो—लुक-छिपकर बैठे रहना। आडा आया—काम में हाथ बटाया। कर्‌यो किसो उपकार—कौनसा उपकार का कार्य किया। किण बळ-पाण—किस बल से। दियो कद कर-कर पोलो—हाथ को खुल्ला करके कब दान दिया।

वात सुणी कामण री करड़ी,
उठी काळजे आग
आलम छोड़ काम में लागो,
फिर-धिर आयो भाग-
चाल में आयो ढोलो
अजी मत०

हरी - भरी लहराई वाड़ी,
लागा हरचन्द द्वार
कन्त - कामणी मुलके - पुलके,
बीती बात - विसार-
करे मनवारां लो ! लो ॥
अजी मत मौमा बोलो ।



कामण—कामिनी। करड़ी—कठोर। फिर-धिर आयो भाग—पुन भाग्योदय हो गया। ढोलो—पति। हरचन्द द्वार—सम्पन्न हुए।

मेह पावणो

राजस्थान मे वर्षाकाल नूतन आशाओं, उमगों और भावाभिव्यक्तियों का उद्भावक होकर आता है। प्रकृति के सूक्ष्म-पर्यवेक्षकों, चतुर-चितेरों तथा जन-साधारण से लेकर पशु पक्षियों तक को, घन-घमण्ड की रुचिर साज सज्जा नभ मे विथुरी देख कर असीम आनन्द अनुभव होता है।

कोयल की पंचम स्वर लहरी, मत्त गयन्द से मयूरों तथा शिशुओं का नैसर्गिक नृत्य नियति नटी के वस्त्राभरणों की पल-पल परिवर्तित हृदयग्राही झाकी सहसा एक ही साथ दृग्गोचर होने लगती है।

प्रस्तुत पक्तियो मे इन आनन्दभरी उल्लसित उमगो का एक चित्र—

दड़ां दूवड़ां दड़-वड़ देतो, भल आयो मेह पावणो

उत्तर दिशा में वदे वादली, धू पुरवाई बाजेजी,
खाखल चढ़ी ऊमटी आंधी, मधरो मधरो गाजेजी,
धरती हसे, सुरङ्गो आभो, गावै मोर वधावणो-
दड़ां दूवड़ां दड-वड़ देतो० ॥ १ ॥

दड़ा-दूवड़ा—टीबों में। दड वड देतो—तीव्र गति से भागता हुआ। भल—अच्छा। पावणो—मेहमान। वदै—बढ रही। धू पुरवाई—वर्षात की वायु विशेष। खाखल—गर्दी। ऊमटी—उमड़ी। मधरो-मधरो—मन्द-मन्द। वधावणो—स्वागत गान।

वात सुणी कामण री करड़ी,
उठी काळजे आग
आलस छोड़ काम में लागो,
फिर-फिर आयो भाग–
चाल में आयो ढोलो
अजी मत०

हरी - भरी लहराई वाड़ी,
लागा हरचन्द द्वार
कन्त - कामणी मुलके - पुलके,
वीती वात - विसार–
करे मनवारां लो । लो ॥
अजी मत मौला बोलो ।



कामण—कामिनी । करड़ी—कठोर । फिर-फिर आयो भाग—पुनः भाग्योदय हो गया । ढोलो—पति । हरचन्द द्वार—सम्पन्न हुए ।

मेह पावणो

राजस्थान मे वर्षाकाल नूतन आशाओं, उमगों और भावाभिव्यक्तियों का उद्भावक होकर आता है। प्रकृति के सूक्ष्म-पर्यवेक्षको, चतुर-चितेरों तथा जन-साधारण से लेकर पशु पक्षियो तक को, घन-घमण्ड की रुचिर साज सज्जा नभ मे बिथुरी देख कर असीम आनन्द अनुभव होता है।

कोयल की पंचम स्वर लहरी, मत्त गयन्द से मयूरों तथा शिशुओं का नैसर्गिक नृत्य नियति नटी के वस्त्राभरणों की पल-पल परिवर्तित हृदयग्राही झांकी सहसा एक ही साथ दृग्गोचर होने लगती है।

प्रस्तुत पक्तियो मे इन आनन्दभरी उल्लसित उमगों का एक चित्र—

दड़ां दूवड़ां दड़-वड़ देतो, भल आयो मेह पावणो
उतर दिशा में चढ़े वादली, धू पुरवाई बाजेजी,
खांखल चढ़ी ऊमटी आंधी, मधरो मधरो गाजेजी,
धरती हसे, सुरङ्गो आभो, गावै मोर वधावणो–
दड़ां दूवड़ां दड़-वड़ देतो० ॥ १ ॥

दड़ां-दूवड़ां—टीबों मे। दड़ वड़ देतो—तीव्र गति से भागता हुआ। भल—अच्छा। पावणो—मेहमान। चढ़ै—चढ़ रही। धू पुरवाई—वर्षात की वायु विशेष। खांखल—गर्दी। ऊमटी—उमड़ी। मधरो-मधरो—मन्द-मन्द। वधावणो—स्वागत गान।

खड़ी खेत में बाड़ बणावै, धण धोरे री ढाळ जी,
हरे खेत रा मीठा सपना, जाणे फूटे फाळ जी,
ऊकारो कर सांढ़ बुलाई, खोलण लागी दावणो-
दड़ां दूबड़ां दड़-बड़ देतो० ॥ २ ॥

कांधे घड़ो, हाथ में मो'री, आगे गोरी गाय जी,
छोटो बिछियो रम्मत घाले, फुर फुर हुरके माय जी,
गोदी बैठो किल्के टाबर, हिवड़े हर्ष अमावणो-
दड़ां दूबड़ां दड़-बड़ देतो० ॥ ३ ॥

काजळ काढ़ कळायण भाके, गोरी गूंघट ओट जी,
गळी बादली लुळ लुळ आवै, वर्षे पाणी-पोट जी,
मोड़ो हुवै लड़ै घर सासू, कारण किसो बतावणो-
दड़ां दूबड़ां दड़-बड़ देतो, भल आयो मेह पावणो ॥ ४ ॥



बाड़—खेत के चौतरफ कांटों की दीवार। ऊकारो कर—शब्द संकेत, जिसे सुन कर पशु प्रायः स्वामी के पास स्वतः चले आते हैं। सांढ—ऊंटनी। दावणो—पैर बांधने की रस्सी। मो'री—ऊंटनी के नाक से सबद्ध रस्सी। काजळ-काढ—अंजन आंज कर। गोरी—नव-वधू। गळी बादली—बदली रसमय बन गयी। वर्षे पाणी पोट—मूसला धार वर्षा। मोड़ो—देर।

भूंडी मार सिनेमारी

सिनेमा जैसे समुन्नत सफल साधन का यदि सदुपयोग किया जाय तो बड़ा आशाजनक परिणाम निकल सकता है। किन्तु इस प्रकार के सबल साधन जब पेशेवर-लोलुप लोगों के हाथ में पड़कर निर्मित एवं संचालित होने लगते हैं तो राष्ट्र का भारी अकल्याण होता है। राष्ट्रीय बृहद् समाज के समग्र क्रिया-शील अंग-प्रत्यंगो व मस्तिष्क के सूक्ष्म ज्ञान-तन्तुओं के मूल प्रेरक संस्थानों पर अत्यधिक हानिकर प्रभाव पड़ता है। फलतः उससे सम्बन्धितों के शरीर व मानस में विकार सगृहीत होकर जीवन की स्वस्थ, पावन दिव्य मधुरिमा को विलुप्त कर, किस प्रकार विकृत एवं दुखद बना देते हैं—प्रस्तुत-गीत की पंक्तियों मे दिखाने का उपक्रम है—

भूंडी मार सिनेमारी

ओय, सिनेमा, हाय, सिनेमा,
आठूं पो'र अधावे रे
वाहर मां'य चौहटे चौड़े,
चूंट - चूंट कर खावे रे
चूड़ावण ज्यूं चूसण लागो,
दुखी किया भारी—
भूंडी मार सि०

आठू पो'र—चौबीसों घंटे। अधावे—तंग करता है। चूंट-चूंट कर खावे—सर्व प्रकार से सन्तप्त करता है। चूड़ावण—पुरुष के पुरुषत्व का उपभोग करने वाली एक प्रेतात्मा।

घांटो झाल जीभ वस कीनी,
आंख कान में अड़ियो रे
हाथ पगां रे लळका देतो,
कपड़ां ऊपर चढ़ियो रे
दिल री लाय बां'ठका वाळे,
ठरे नहीं ठारी—
भूंडी मार सि०

नाड़ - नाड़ में जहरी रमियो,
रूं - रूं रातो मातो रे
मोटा रोग मुळकता लावे,
शेपे जी ने भातो रे
तन, मन, धन री धूड़ वणावण,
करे गजब ब्यारी—
भूंडी मार सि०

मर मजदूर कमावे रिपियो,
थाको मांदो आवे रे
टाबरियां ने छोड़ - छान में,
मन बहलावण जावे रे
थाकेलो इण तरह उतारे,
कर - कर झकमारी—
भूंडी मार सि०

घाटो—गर्दन। झाल—पकड़ कर। अड़ियो—अटग गया। कपड़ा ऊपर चढ़ियो—वस्त्रों पर चित्र तारिकाओं के चित्रों का चित्रण, अनियन्त्रित कामाग्नि। बा'ठका—पौंवे। वाळे—जलाती है। ठरे नहीं—शात नहीं होता। शेपे जी ने भातो—मौत। मर-मजदूर—बड़ी कठिनता से। थाको मादो—थकान से चूर होकर। थाकेलो—थकान। झकमारी—अनुचित कृत्य।

गुणवन्ती

कुछ सिगरेट पान में फूंकै,
कुछ कुणक्यां ठग खावे रे
परणी बीवी काठी उथपे,
छेकड़ लाज गमावे रे
नागी भूखी, पड़दो - फाड़े,
आंख काढ़ खारी—
भूंडी मार सि०



कुणक्या—वारागनाएं, उप-पत्नियां। उथपे—हैरान होना। छेकड़—अन्त में।

संतान रो सुख

मातृ - पितृ हृदय की गहराइयों को कल्पना या अनुमान के बल नहीं आंका जा सकता। वस्तुतः माता - पिता बन कर ही इस सम्बन्ध में कुछ अनुभव किया जा सकता है।

बच्चे के शिशु - जीवन से लेकर किशोर बनने तक मा - बाप को उसके जीवन - निर्माण - विषयक जिन जिन कठिनाइयों से सीधा संघर्ष करना पड़ता है, वे बड़ी विकट एवं अपरिमित होती हैं। किन्तु इन तकलीफों की ओर स्मृति करके पितृ - भक्त बनने वाली सन्तान बहुत ही कम होती है।

जब जीवन की ढलती अवस्था में उनको संतान की ओर से सन्तोषजनक सेवा तथा उचित व्यवहार नही मिलता है तो बड़ी मार्मिक पीड़ा होती है। परन्तु वे अशक्त अवस्था मे होने के कारण पश्चाताप के सिवाय और कुछ नही कर पाते।

ऐसे ही एक सत्रस्त - व्यथित हृदय की ध्वनि निम्न पक्तियों मे बाधने का यत्न किया गया है—

ऊंधा गोडा घाल खोजग्या छाती ऊपर मूंग दळै

जलम हुयो जद ठरयो काळजो, वेटेरी खुसियां भायी,
गोठां उडी महफलां लागी, खर्च - वर्च री छिब छाई,
दियो इनाम बधायां बांटी, बीं करणी रो फर्ज फळै,
ऊंधा गोडा घाल खोजग्या छाती ऊपर मूंग दळै।

खुद दुग्ध पाय पोखियो टाबर, नीः नीः थोक किया सारा,
बारह वर्ष पढायो जी भर, अर्थ - गर्थ खोया न्यारा,
मनरी रळी गळी में गमगी, नित्त बाथेड़ो घणी कळै,
ऊंधा गोडा घाल खोजग्या, छाती ऊपर मूंग दळै।

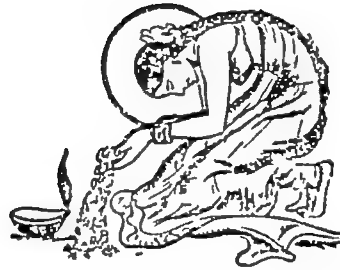
घुड़ले मान बीनणी मिलगी, बनो, बनी रच-पच डोले,
बूढ़ा मायत पड़ो धहड़ में, वे मतलब छाती छोले,
तिस्सा भूखा, खुणे खचूणे, दुख दर्दों में सड़े गळै,
ऊधा गोडा घाल खोजग्या, छाती ऊपर मूंग दळै।

चलती वहू ठोकरां मारे, चोटी में बटको बोड़े,
वांट किड़किड़ा भरे जहोड़ा, भिडे कहे कान फोड़े,
वळ - जळ सासू हुवे भुरड़ को, केवा काढे वहू तळै,
ऊधा गोडा घाल खोजग्या, छाती ऊपर मूंग दळै।

ऊंधा गोडा'''—पितृ-भक्ति से हीन स्वेच्छाचारी पुत्रों के प्रति अनादर सूचक शब्द, हीनोक्ति। ठरयो काळजो—तीव्र अनुभव हुआ। नीः नीः थोक—सबकुछ। मन री रळी—पुत्र के प्रति पिता के मन में आने वाले सुखद स्वप्न। गमगी—खोगई। बाथेड़ो—हाथापाई। कळै—लड़ाई। घुड़ले मान—घोडे के बराबर, बडी। बनो-बनी—पति-पत्नी। धहड़ में—गड्ढे मे। छाती-छो'ले—तंग करते हैं। तिस्सा—प्यासे। खुणे-खचूणे—किसी उपेक्षित कोने मे। चोटी मे बटको बोडे—कटु शब्दों से मर्मांग भेदना। केवा-काढे—पूर्व का बदला लेना।

आखी ऊमर करी कमाई, सांस लियो नहीं पी पाणी,
सूंपी चावी पूत परायो, इः वातां पण नीः जाणी,
मांग कियां कद मिले मोतडी, डावी डोढी आय टळे,
ऊंधा गोडा घाल खोजग्या, छाती ऊपर मूंग दळे।

पुत्तर खातर तरसे दुनियां, टूणा-टामण सैंग करे,
वैद हकीमां रा पग पूजे, कहवे जितरा थोक करे,
पूत कपूत हुयों दुख भारी, बिना वास्ते खून बळे,
ऊंधा गोडा घाल खोजग्या, छाती ऊपर मूंग दळे।



आखी—तमाम। सूंपी—दी।

ध्वजवन्दन

राष्ट्रीय सत्ता, शक्ति, सभ्यता, तथा संस्कृति का सच्चा प्रतीक एवं प्रतिनिधि राष्ट्र ध्वज राष्ट्रीय नागरिकों के लिए सदा-सर्वदा वन्दनीय एवं संरक्षणीय होता है। राष्ट्र ध्वज का दुरुपयोग या अपमान राष्ट्रीय महापाप एवं अक्षम्य अपराध माना गया है, क्योंकि इसके साथ ३५ करोड़ जन-शक्ति का भाग्य सम्बन्धित है।

अत. राष्ट्र-ध्वज की महिमा, महत्ता, तथा उसके प्रभाव का परिचय कमसेकम प्रत्येक भारत वासी को होना परम आवश्यक है। प्रादेशिक जन-वाणी इस कार्य की सिद्धि के लिए अत्यन्त उपयुक्त रहती है।

प्रस्तुत पंक्तियों में ध्वज फहराने के समय का एक शब्द-चित्र—

भारत मां री धजा फरूके

[१]

हेमालय रे हर्ष घणेरो, मुल्क पुलक कर आफत टाळे।
भारत मां रे गङ्गाजल सूं, भाल तिलककर चरण पखाळे।
दादुर गावे कोयल बोले, मीठा मीठा मोर टहूके।
सांच अहिंसा समता वाली, भारत मां री धजा फरूके।

फरूके—फहराती है। पखाळे—धोता है। टहूके—मयूरों की हर्ष ध्वनि।

[२]

छोळां मारे गहरो गाजे, हबोला समदर देवे है।
लहरां साथे रास रचावे, बीती वड़ रीति कहवे है।
राम-राज री पाज दिखाकर, याद करावण में कद चूके।
सांच अहिंसा समता वाली, भारत मां री धजा फरूके।

[३]

काली रातां री वे वातां, हंस हस चांद सुवावण आवे।
तांरा - वारां वण आई है, पूनू सजधज हुलस वधावे।
धजा बीच में सबल सुधाकर, जड़-सिष्टि मे जीवन फूंके।
सांच अहिंसा समतावाली, भारत मां री धजा फरूके।

[४]

पूरो तेज लियो दिन ऊगे, आजादी रो उछव बढावे।
सहसूं किरणा झल झळकाणी भाग भरी भारत पर छावे।
रतन नीपजे, चौड़े चमके, दुख दुर्गण दळद्र दळ सूके।
सांच अहिंसा समता वाली, भारत मां री धजा फरूके।

[५]

नदियां नीर निर्मला वहवे, सर-सरवर फूलां सूं छाया।
भवर चंवर ज्यूं तरवर डोले, महक उठी सारी बनराया।
ऊंचा उड उड पंछी किळके, सकल हंसे पण गायां कूके।
सांच अहिंसा समता वाली, भारत मां री धजा फरूके।

छोळा—सवेग लहरें। गाजे—गर्जता है। हबोळा—वेगवती तरंगों का टकराव। पाज—सेतु। सहसूं—हजारों। झळकाणी—चमकती है। दळदर—अलक्ष्मी। दल—समूह। भवर चंवर—सुन्दर हवा करने का उपकरण (मन्दिरों मे देव प्रतिमा पर हवा करने के लिए गोपुच्छ का बना होता है- उसे चंवर कहते हैं)। कूके—रोती है।

आगेरा आंक

व्यक्तिवाद, स्वार्थपरता, तथा विषमताओं का विकार जब अपनी सहज स्थिति की सीमाओं का अतिक्रमण कर, जीवन के प्रत्येक प्रदेश को स्पर्श करता है तथा सामाजिक जीवन की जीवनीय आधार भूत धरातल में प्रलयंकर विस्फोट होकर भूचाल आता है। जिससे शोष्य शोषण के कृत्रिम दानवीय आधारों और उसके मूर्तरूप ससार की समाप्ति होकर नव-सृष्टि का उदय होता है। उसके आकार प्रकार तथा आसार प्रकट होते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कुछ ऐसी ही कल्पना है—

सेंस फणाळो माथो धूणे, धरर धरती धूजेला

धू धू कार मचेला भारी, अगल-बगल नहीं सूझेला
बिना दीखतो परळे हूसी, अम्बर अवट अमूझेला।

दिन में रात रात में दिन हुै, डांफर डाकण जूझेला
का पुरषां रा काढ काळ्जा, ककालो ने पूजेला।

सेस फणाळो—शेषनाग। धूणे—कपाता है। मचेला—होगा। अवट—घुटन। अ बर—आकाश। अमूझेला—तत होगा। डाफर—ठंडी तेज हवा। कापुरषारा—पुन्सत्व हीनों का।

लूंगाड़ां रे लांपो लागे, भूंडां ने भच भूंजेला
वेलड़ियां तळ तांता तागे, अळिया जटक अळूझेला।

समदर छोळ उठेला ऊँची, घटा घोर घुर गूँजेला
लूंट-भूठ री माया मिटसी, डीघा डूंगर डूवेला।

लाखां-लेखण, कोट-कांगरा, अभकी वख्त तुईजेला
आण-दुहाई फिरे अलखरी, मिनख - मिनखता पूजेला।

धोई - धुपी सोवनी काया, सज - सूली पर मूजेला
किया कबाड़ा परगट होकर, लांबो लेखो बूझेला।

ऊंडा घाव पाधरा हूसी, फट फट फाला फूटेला
नुंई जगत रो नयो जमारो, नुंई गाय घर दूमेला।



भू जेला—तलेंगे। ताता—नाल, शाखाएँ। कोट कागरा—गढो के कंगूरे। तुईजेला—व्यर्थ होंगे। कबाडा—कुकृत्य। नुई—नूतन।

लेखक की अन्य पुस्तकें जो शीघ्र ही प्रकाशित होने की तैयारी में हैं

●

१. 'रसवन्ती'

सरस सुरुचिपूर्ण शिक्षाप्रद राजस्थानी कहावतों का संग्रह।

संपादित

२. 'लावण्य-लहरी'

[संगृहीत] प्राचीन विविध कवियों की रसपूर्ण रचनाओं का ...

३. 'अवधूत-वाणी'

[खोजपूर्ण] अवधूतों, अवलियों, फकीरों आदि का अनुभव अलभ्य वाणी का संग्रह।

●

राजस्थानी भाषा के अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

"अलगोजो"	मन्तकुमार व्यास	२)
"राजिया रा दूहा"	श्री नरोत्तमदास जी स्वामी	॥)
"चन्द्रसखी के भजन"	श्री रामसिंह जी	।=)

प्राप्ति स्थान

नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर